जॉन सिंहः दिगन्तर के फाउण्डर प्रेसिडेंट

रोहित धनकर

बड़े गहरे दुःख के साथ मुझे यह लिखना पड़ रहा है कि हमारे फाउंडर प्रेसिडेंट, जॉन सिंह (जितेन्द्र पाल सिंह) अब हमारे बीच नहीं रहे, 13 अप्रैल 2016 की रात उन्होंने अंतिम सांस ली। उम्मीद करता हूं कि हम उनके मूल्यों का निर्वाह कर पाएंगे और उनके सामाजिक सरोकारों व व्यावहारिक बुद्धिमत्ता से मार्गदर्शन प्राप्त करते रहेंगे।

जॉन का कार्यक्षेत्र दिगन्तर से बहुत ज्यादा व्यापक था और जहां तक मैं समझता हूं दिगन्तर इसका एक बेहद छोटा हिस्सा भर था। मैं उनके सभी व्यक्तिगत व सामाजिक कामों से बहुत गहरे से परिचित नहीं था और ना ही मैं उनके व्यक्तित्व व सामाजिक योगदान को पूरी तरह सामने लाने में समर्थ हूं। मैं यहां बतौर संस्था अपने फाउंडर प्रेसिडेंट को खोने के फलस्वरूप हुई क्षति को अभिव्यक्त करने की कोशिश भर कर रहा हूं।

मैंने जॉन और फेथ (जॉन की पत्नी) जैसे दूसरे और लोग नहीं देखे जो सिर्फ एक शिक्षाशास्त्री की इस बात को तवज्जो देते हुए अपने बच्चों के लिए चल रही स्कूल की खोज को छोड़ देते हों कि वे खुद ही अपना स्कूल शुरू कर दें जिसमें उनके अपने बच्चों के साथ उस इलाके के वंचित वर्ग के बच्चे भी पढ़ें जहां वे रह रहे थे। जॉन और फेथ अपने बच्चों को भारत ही नहीं दुनिया के किसी भी स्कूल में भेज सकते थे। किन्तु इसकी बजाए जब डेविड ऑसबर्ॉ ने उन्हें यह सुझाया कि जितना धन वे अपने बच्चों की शिक्षा पर खर्च करेंगे उतने में तो वे 25 दूसरे बच्चों को भी अच्छी शिक्षा उपलब्ध करवा सकते हैं तो उन्होंने न सिर्फ डेविड की इस बात में भरोसा जताया बल्कि उन नौसिखिए युवा अध्यापकों पर भी भरोसा जताया जिन्हें डेविड ने प्रशिक्षित (डेविड के इस प्रशिक्षण में शुरुआत में एक शिक्षक जुड़े बाद में एक और जुड़े तो दो हो गए।) किया। इस प्रकार दिगन्तर अस्तित्व में आया।

यह एक शुरुआत भर थी। शुरुआती दौर में दिगन्तर अपनी शिक्षण पद्धतियों व गतिविधियों के संदर्भ में फेथ के मार्ग दर्शन में संचालित था किन्तु मानव जीवन व सामाजिक सरोकारों को लेकर जॉन का अपना नजरिया था और फेथ की उनसे सहमति थी। यह दिगन्तर के विकास को दिशा देने के लिए बेहद महत्वपूर्ण था। उनका अपने बच्चों को एक ऐसे स्कूल में पढ़ाना जिसमें दूसरे सभी बच्चे बेहद गरीब परिवारों के थे और उनके सामाजिक व आर्थिक स्तर से बहुत निचले स्तर पर थे और उनके लिए उन दो शिक्षकों से जो कि हर बच्चे के साथ बराबरी का व्यवहार करने के मामले में कहीं ज्यादा झक्की स्वभाव के थे किसी तरह की अतिरिक्त मांग न करना आज के भारतीय समाज में एक असंभव-सी नजर आने वाली चीज है।

जॉन का दिगन्तर के बच्चों के साथ खेलों में भाग लेना, उन्हें अपनी जीप में पिकनिक पर ले जाना और उन्हें कई दूसरी तरह की गतिविधियों में शामिल करना एक ऐसी चीज थी जिसने शिक्षकों व बच्चों दोनों

को मानवीय मूल्यों की समझ को बेहतर करने व उन्हें जिंदगी में अपनाने में मदद की। मुझे यह सोचकर अचरज होता है कि कैसे उन्होंने उन दो दर्जन मुक्त व जोशीले बच्चों को तथा वैचारिक दृष्टि से दृढ़ शिक्षकों को झेला होगा, पिकनिक पर उनका पकाया बेस्वाद खाना खाया होगा।

एक मनुष्य के तौर पर मेरे विकास के लिए व मेरी वैचारिक प्रतिबद्धता में भरोसा जताने के लिए मैं व्यक्तिगत तौर पर जॉन का आभारी हूं। एक ऐसा स्कूल चलाने के लिए जो उस इलाके में चल रहे दूसरे स्कूलों से एकदम अलग तरह का हो एक तरह का आत्मविश्वास व प्रतिबद्धता चाहिए होती है अगर जॉन और फेथ का सहयोग नहीं मिला होता तो उन दिनों व्यक्तिगत तौर पर इसे करना मेरे बस की बात नहीं थी।

उन्होंने और फेथ ने 10 सालों तक स्कूल को अपने व्यक्तिगत धन से सहयोग किया और जब दिगन्तर शिक्षा एवं खेलकूद समिति की नींव रखी गई तो कई सालों तक उन्होंने इसे अपना मार्गदर्शन दिया। जब स्कूल व संस्था की गतिविधियां आगे बढ़ीं तो उन्होंने लगातार अपना सहयोग जारी रखा, इसके प्रबंधन में मार्गदर्शन दिया और यह मार्गदर्शन रोजमर्रा के प्रबंधन में बिना किसी तरह का हस्तक्षेप किए दिया; शिक्षक को पूरी आजादी दी। हमारी सामर्थ्य व नैतिकता में बेहिचक भरोसा करने के लिए मैं और रीना सदा उनके आभारी रहेंगे।

एक खराब मैनेजर होने के नाते तथा तार्किक विचारों के विशुद्ध सौन्दर्य के आधार पर संस्था को संचालित करने की प्रवृत्ति के चलते अक्सर मैंने दिगन्तर को वित्तीय व संस्थागत मुसीबतों में डाला है। अब मैं पीछे मुड़कर देखता हूं तो लगता है कि ऐसा मैं इसलिए कर पाया क्योंकि मेरे मन में कहीं गहरे यह भरोसा मौजूद था कि जॉन के रूप में हमारे पास एक ऐसा संरक्षक मौजूद है जो सारे संकटों से हमें उबार लेगा और जॉन ने हमें निजी वित्तीय संकटों से लेकर संस्थागत स्तर पर मीटिंगों में मिलने वाली कटु आलोचानाओं तक सब तरह के संकटों से उबारा।

चित्र में बाएं से दाएं रोहित धनकर (जीप के आगे खड़े हुए) , रीना दास (आगे की सीट पर),
मध्य में दिगन्तर स्कूल के बच्चे एवं जॉन (जीप के पीछे की ओर खड़े हुए)।

एक कठिन दौर में हमने किसी दूसरी परियोजना के लिए मिले पैसे को स्कूलों को बचाए रखने के लिए खर्च कर दिया था। जब यह बात ''फंडर'' को बताई गई तो उन्होंने पैसा वापिस करने की मांग रख दी; जो कि सर्वथा उचित थी। जॉन ने नजर भर अकाउंट को देखा और इस बात से संतुष्ट होने के बाद कि इसमें कुछ भी व्यक्तिगत व अनुचित नहीं है हमसे ऐसा करने के कारण लिखकर देने के लिए कहा। जब हमने 500 बच्चों की शिक्षा बंद हो जाने का खतरा बताया तो वे इसे तुरंत समझ गए और खुद ''फंडर'' से मिलकर धनराशि लौटाने का समय तय किया और यह समझाने की कोशिश की कि इसमें पैसे को लेकर किसी तरह का कोई दुरुपयोग नहीं हुआ है यह तो तकनीकी गलती मात्र है। मुझे पक्का यकीन है कि ''फंडर्स'' जॉन के व्यक्तित्व व उनके द्वारा दिगन्तर की व्यक्तिगत जिम्मेदारी लेने की वजह से ही हम पर भरोसा कर पाए थे। उन्होंने बड़ी धनराशि उपलब्ध करवाकर भी हमारी मदद की जिसकी वजह से हम न सिर्फ काम जारी रख पाए बल्कि फंडर को उनके साथ तय हुए समय पर पैसा भी लौटा पाए। जब मैं इस घटना को याद करता हूं तो सबसे पहले मेरे मन में दिगन्तर को लेकर एक संरक्षक का भाव उनमें मौजूद होना ही याद आता है बाकी सब तो उसी की अभिव्यक्तियां हैं।

संस्थागत मामलों में मार्गदर्शन करने में उनका संतुलित रवैया और किए जा रहे काम के महत्व की सराहना करना उनका सहज स्वभाव था। मुझे ऐसा लगता है यह सब उनमें मौजूद गहरी मानवता से सहज रूप में प्रवाहित होता था। दिगन्तर इस समय संकट से गुजर रहा है और जॉन को एक साल पहले जैसे ही यह पता चला तो वे फिर से सक्रिय हो गए थे। स्कूल धीरे-धीरे अब सुरक्षित हो रहे हैं और दिगन्तर के सभी लोग इसमें मदद कर रहे हैं। किन्तु जॉन का विशिष्ट मार्गदर्शन प्राप्त होना, संस्था में मौजूद शक्ति में भरोसा जताना तथा जब आशा की कोई किरण नजर नहीं आ रही थी तब रीना के प्रयासों में भरोसा रखना यह कुछ ऐसी चीजें हैं जिन्हें वे ही कर सकते थे। हालांकि वर्तमान संकट से पार पाने के पीछे पूरी एक्जीक्यूटिव कमेटी का प्रयास है फिर भी व्यक्तिगत तौर पर मुझे यह महसूस हो रहा है कि एक मायने में दिगन्तर अनाथ हो गया है।

दिगन्तर के काम को लेकर जॉन को जो फक्र महसूस होता था वह साफतौर पर दिखाई देता था। जब भी उन्हें किन्हीं नए कामों या सफलता के बारे में पता चला या अपने अनगिनत संपर्कों की वजह से कहीं कुछ अच्छा सुनने को मिला तो उन्होंने हमेशा हमसे साझा किया और हमें प्रोत्साहित किया कई बार उन्हें ऐसे लोगों से दिगन्तर के काम की तारीफ सुनने को मिली जिन्हें यह तक पता नहीं था कि जॉन उसके फाउंडर प्रेसिडेंट हैं। वे इन किस्सों को ऐसी संतुष्टी के साथ सुनाते थे कि दिगन्तर के प्रति उनका लगाव साफ तौर पर झलकता था।

जॉन धार्मिक व कट्टर हुए बिना भी गहरे तौर पर आध्यात्मिक थे। मैं अपने भीतर आध्यात्मिकता का नामोनिशान भी नहीं पाता फिर भी यह कामना करता हूं कि आत्मा और उसके उद्भव में उनका भरोसा सही हो और उनके विचार लगातार हमारा संरक्षण और मार्गदर्शन करते रहें। प्यारे जॉन तुम बहुत याद आओगे। ◆

भाषान्तरः प्रमोद पाठक

लेखक परिचयः अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में प्रोफेसर एवं अकादमिक विकास के निदेशक हैं और दिगन्तर, जयपुर के संस्थापक सदस्य एवं अकादमिक सलाहकार हैं।